नवें दशक के हिंदी उपन्यासों में अंकित ग्राम जीवन का सामाजिक पक्ष

Tarannum Bano

नवें दशक के हिंदी के ग्राम परक उपन्यासों में गोपुली गफूरन (1981)–शैलेश मटियानी,गोपीगंज संवाद (1981)–प्रणवकुमार बंधोपाध्याय, महर ठाकुरों का गाँव(1984)-बटरोही,घास गोदाम(1985)–जगदीशचंद्र, ग्राम देवता(1982)–रामदेव शुक्ल ,सोना माटी(1983)–विवेकीराय,भारत बनाम इंडिया(1983)–श्रवणकुमार गोस्वामी, देश जिंदाबाद (1985) – शैलेश पंडित,दंड विधान (1986)– मुद्रा राक्षस, संकल्पा (1987)–रामदेव शुक्ल, समर शेष है (1988)–विवेकी राय ,विकल्प (1988)–रामदेव शुक्ल, आंगन नदिया (1990)– अन्नाराम सुदामा आदि उपन्यासों में ग्राम जीवन का चित्रण किया गया है।

नवें दशक के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में गाँव के समाज जीवन का चित्रण करने के लिए भारत के विभिन्न प्रांतों में बसे गाँवों का आधार लिया है ।

' 'सोनामाटी' उपन्यास का ग्रामीण समाज उत्तरप्रदेश में बसे करइल अंचल से, 'महर ठाकूरों का गाँव' उपन्यास का ग्रामीण समाज अल्मोड़ा जिले के सीरगाड़ नामक गाँव में बसे कुमाऊँ के महर ठाकुर नामक जनजाति से, 'घास गोदाम' का ग्रामीण समाज दिल्ली के आस–पास बसे पंजाबी गाँव से, 'समर शेष है' उपन्यास का घटना क्षेत्र पूर्वी उत्तरप्रदेश के अविकसित भू–भाग से,'आंगन नदिया' का ग्रामीण समाज राजस्थानी अंचल में बसे एक गाँव से संबंधित है। अन्य उपन्यासों में भी इसी तरह देश के विभिन्न प्रांतो में बसे गाँवों का परिचय दिया गया है।

पूर्व दशक के ग्रामीण जीवन से संबंधित उपन्यासों के समान नवें दशक के उपन्यासों में भी गाँव में बसी विविध जातियों का उल्लेख किया गया है।

बहुसंख्यक जाति का गाँव की अल्पसंख्यक जाति पर दबाव रहता है ।

'गोपुली गफूरन' उपन्यास में ठाकुर जाति का, 'गोपीगंज संवाद' में अहीरों का, 'नदी नहीं मुड़ती' में मैथिल ब्राम्हणों का, 'ग्राम देवता' व 'पीली धूप' में ब्राम्हणों का, 'महर ठाकुरों का गाँव' में महर ठाकुर नामक जनजाति का बाहुल्य है।

वर्ग स्तर

ग्रामीण समाज को मोटे रूप से तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है – उच्चवर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग। नवें दशक के उपन्यासों में भी पूर्व परंपरा के अनुसार उच्चवर्ग द्वारा निम्नवर्ग के शोषण का अंकन अधिकांश रूप में किया गया है।

जमींदारी उन्मूलन के पश्चात् आज भी ग्रामीण समाज में इन जमींदारों का आतंक किसी न किसी रूप में दिखाई देता है। इस संदर्भ में 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास का पात्र कामता, महरूख से कहता है, ''हम तो समझित हन कि जमींदारी उन्मूलन से अत्याचार कम नाहीं भवा, न हामर सोषण। बल्कि जमींदार के स्थान पर चार और जमींदार सरीखे बाबू हमार टेंटवा दबावत हैं – तहसीलदार और औके हरकारे यमराज हैं ससुरे।''[1]

'दंड विधान' उपन्यास में उच्चवर्ग द्वारा गाँव के मुसहरों पर किए गए अनेक अत्याचार दिखाए गए हैं। यहाँ तक कि उनकी स्त्रियों के साथ वे बलात्कार करते हैं।

इसी प्रकार 'देश जिंदाबाद' उपन्यास में उच्चवर्ग के शशिबाबू का, 'सोना माटी' में करइल हनुमानप्रसाद का, 'विकल्प' उपन्यास में चौबे परिवार का निम्नवर्ग पर शोषण चित्रित किया गया है।

मध्यवर्ग के अंतर्गत 'गोपीगंज संवाद' उपन्यास के नानू अहीर, मीडिल पास चरन अहीर, कुंदन लुहार, सुदामा हलवाई आदि, 'ग्राम देवता' उपन्यास का निम्न जाति में जन्मे वकील हरखू, 'समर शेष है' उपन्यास के अध्यापक संतोषी पंडित, सुराज, रामराज, जानकीनाथ आदि, 'विकल्प' उपन्यास के प्रो. कृष्णदेव, अकालू प्रधान आदि, 'ठीकरे की मंगनी' के गाँव के अध्यापक आदि को रखा जा सकता है। इनमें से अधिकांश उपन्यासों में मध्य वर्ग के अंतर्गत पढ़े–लिखे बुद्धिजीवी वर्ग के व्यक्ति आते हैं जो या तो गाँव के निम्नवर्ग में उनके शोषण के विरूद्ध चेतना जागृत करने का काम करते हैं या उच्चवर्ग के अत्याचार को देखकर मन ही मन तड़पकर रह जाते हैं।

इस काल के अधिकांश उपन्यासों में निम्नवर्ग के अंतर्गत निम्न जाति के हलवाहे, मजदूरों आदि के दयनीय जीवन का चित्रण किया गया है। उच्चवर्ग द्वारा निम्नवर्ग के अत्याचार का क्रूर यथार्थ चित्रण 'दंड विधान' उपन्यास में मुसहरों के दयनीय जीवन के रूप में वर्णित हुआ है। 'गोपीगंज संवाद' उपन्यास में उच्च जाति के अहीरों का आतंक है।

उच्चवर्ग की स्त्रियों की तुलना में निम्नवर्गीय स्त्रियों की दशा अधिक दयनीय होती है। वह प्रायः उच्चवर्ग के पुरूषों द्वारा अधिक शोषित होती है।

'गोपीगंज संवाद' उपन्यास में अहीर जाति के चौधरी जगन्नथ द्वारा गाँव की अधिकांश स्त्रियाँ शोषित हैं।

ग्रामीण समाज और बिरादरी

ग्रामीण समाज में बिरादरी का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान हुआ करता है। बिरादरी से कटकर ग्रामीण व्यक्ति के लिए समाज में जीना अत्यंत कठिन होता हैं । ग्रामीण समाज में बिरादरी आम व्यक्ति पर दबाव डालकर किसी–न–किसी बहाने अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगी हैं इस तथ्य पर नवें दशक के उपन्यासकारों ने पर्याप्त प्रकाश डाला है।

'महर ठाकुरों का गाँव' उपन्यास में ठाकुर जाति के हरदा पर बिरादरी दबाव डालती है कि वह शास्त्र ज्ञान छोड़ दे क्योंकि शास्त्र ज्ञान पर केवल पंडित जाति के पाणेज्यू का अधिकार हैं ।

गाँव में यदि कोई अनैतिक संबंध स्थापित करता है तो उसके लिए बिरादरी में जीना और भी मुश्किल हो जाता है। बिरादरी में न केवल उसे व्यंग्य बाण सहना पड़ता है बल्कि उनका हुक्का पानी भी बंद कर दिया जाता है।

'गोपुली गफूरन' उपन्यास में गोपुली और ठाकुर घराने के विक्रमसिंह के बीच अनैतिक शारीरिक संबंध होने पर गोपुली गर्भवती हो जाती है। तब बिरादरी के भय से विक्रम गाँव से भाग जाता है। गोपुली भी बिरादरी के व्यंग्य बाण से बचने के लिए मुसलमान सद्दू मियाँ से विवाह करके गाँव छोड़कर शहर में गोपुली से गफूरन बनकर रहती है।

इसी प्रकार 'देश जिंदाबाद' उपन्यास में जमींदार शशि बाबू से माँ बनी सुगना की पत्नी चंपा के प्रायश्चित के लिए बिरादरी सुगना पर बिरादरी भोज देने का दबाव डालती है किंतु वे जमींदार शशि बाबू पर कोई दबाव नहीं डालते क्योंकि वे पुरूष हैं।

यदि कोई अपनी जाति के बाहर विवाह करता है तो उसके लिए भी बिरादरी में जीना कठिन हो जाता है।'ग्राम देवता' उपन्यास में तिवारी का पुत्र प्यारू मुसलमान लड़की शहनाज से विवाह करके, बिरादरी के भय से शहर भाग जाता है। तब बिरादरी के द्वारा उसके परिवार का बहिष्कार कर दिया जाता है।

सामाजिक ध्यारिवारिक समस्या

ग्रामीण समाज में आज नगरीय प्रभाव तथा औद्योगिक विकास के कारण समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। संयुक्त परिवार विघटन, संबंधों में तनाव, वर्ग संघर्ष, समाज में मूल्यहीनता आदि समस्याएँ स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ग्रामीण समाज की प्रमुख समस्याएँ हैं जिनका चित्रण नवें दशक के उपन्यासकारों ने भी किया है।

'गोपीगंज संवाद', 'दूसरा घर', 'शैलूष', 'आंगन नदिया', 'दंड विधान' आदि उपन्यासों में भी गाँव में कुछ संयुक्त परिवार होने के संकेत मिलते हैं।

संयुक्त परिवार विघटन का मुख्य कारण कहीं परिवार की स्त्रियों के आपसी झगड़े हैं तो कहीं कमानेवाले सदस्य का समस्त परिवार की जिम्मेदारी न लेने के कारण संयुक्त परिवार का विघटन हुआ है।'आंगन नदिया' उपन्यास में घर में जगह की तंगी तथा स्त्रियों की आपसी ईर्ष्या के कारण मीठू को अपने चचेरे भाई से अलग होना पड़ा।

संबंधों में तनाव

ग्रामीण समाज में आज भाई–भाई, पिता–पुत्र, पति–पत्नी, चाचा–भतीजा आदि संबंधों में तनाव बढ़ता जा रहा है। जिसका वर्णन नवें दशक के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में किया। इस संदर्भ में 'संकल्पा' उपन्यास का पात्र अरुन विचार करता है, ''गाँव में मिलने पर सब भाई–भाई, काका–भतीजा, आजा–नाती इन्हीं रूपों में मिलते थे। इधर अरुन को बहुत दिनों से लगता रहा है कि अब गाँवों में उस तरह के उमड़ते हुए रिश्तों की ललक सूखती जा रही है।''[2]

'सोना–माटी' उपन्यास में भुवनेश्वर का अपने पिता हनुमानप्रसाद से तनावपूर्ण संबंध है। 'देश जिंदाबाद' उपन्यास में काका का बड़ा पुत्र उसे बेईमान घोषित करके, अपनी पत्नी के साथ हमेशा के लिए अलमोड़ा चला जाता

पिता–पुत्र के संबंधों में इसी तरह का तनाव 'ग्राम देवता' आदि उपन्यासों में भी चित्रित किया गया है।

भाई–भाई के बीच तनावपूर्ण संबंध का चित्रण करते हुए 'अग्निपर्व' उपन्यास में उपन्यासकार लिखते हैं, ''बीस वर्षों के बाद गाँव लौटे सगे भाई का कैसा अजूबा सत्कार किया था जियावनसिंघ ने।''[81] जियावनसिंघ फौज की नौकरी से बीस वर्ष बाद लौटे अपने बड़े भाई सुमेंरसिंघ के साथ न केवल बुरा बर्ताव करता है बल्कि उसके हिस्से की जायदाद भी हड़प लेता है।

. छुआछूत समस्याएँ

ऊँची जाति के लोग तो छुआछूत द्वारा समाज में अपना बड़प्पन प्रदर्शित करते ही हैं। नीच जाति को भी अपने अछूत होने का पूरा अहसास रहता है। 'विकल्प' उपन्यास में योगेंद्र जब निम्न जाति के झगरू से पानी पीने को माँगता है तब झगरू कहता है, ''आप काहे दोनों का धरम लेने को उतारू हैं? आप सुराजी हो तो हो। हम तो धरम को मानते हैं। हम अपना परलोक नहीं बिगाड़ेंगे।''[3]

वैवाहिक समस्याएँ

ग्रामीण समाज में वैवाहिक समस्याओं के विविध रूप.. बाल विवाहए अनमेल विवाहए दहेज समस्याए प्रेम विवाह समस्या आदि मिलते हैं ।

'गोपुली गफूरन' उपन्यास में गोपुली का विवाह नौ वर्ष की उम्र में हुआ था। 'ग्राम देवता' उपन्यास में बिरजू महाराज के भतीजे मोहन का विवाह पंद्रहवें वर्ष में हुआ था। '

अनमेल विवाह का उल्लेख 'गोपीगंज संवाद' उपन्यास में इस प्रकार किया गया है, ''जगन्नाथ ने पचास की उम्र में चौदह बरस की लाली का हाथ पकड़ा था।''[4]

'दूसरा घर' उपन्यास में जमींदार के आतंक के डर से असरफी की माँ पन्द्रह वर्ष की उम्र में ही उसका विवाह पैंतालीस वर्ष के एक विदुर के साथ कर देती है।

अनमेल विवाह, बाल विवाह के साथ बाल विधवाओं का उल्लेख भी नवें दशक के कई उपन्यासों में किया गया है। 'गोपीगंज संवाद' की देवकी, 'ठीकरे की मंगनी' में महरूख की सहयोगिनी सुलोचना, 'सोना–माटी' में नवीन की फूआ बाल विधवाएँ हैं।

ग्रामीण समाज में दहेज प्रथा एक विकट समस्या है। ग्रामीण समाज में लड़कों को पढ़ाया भी इसलिए जाता है कि दहेज अधिक लिया जा सके। जो जितना पढ़ा होता है उसका मूल्य उतना ही बढ़ जाता है।'गोपीगंज संवाद' उपन्यास में राधे लुहार के बेटे कुंदन को जब दहेज कम मिलता है तो बिरादरीवाले उसका मजाक उड़ाते हैं।

'सोना माटी' उपन्यास में रामरूप अपनी बेटी कमली के विवाह के लिए दहेज न जुटा पाने की अपनी मजबूरी की पीड़ा को व्यक्त करता हुआ कहता है, ''हाय रामरूप, जितने रुपये तिलक–दहेज में खरचने हैं उतने रुपये तू जीवन भर में भी कमा सकेगा कि नहीं।''[5]

'संकल्पा' उपन्यास में ग्रामीण लोग अधिक दहेज प्राप्ति के लालच में अपने बेटे को विद्यार्थी बनाए रखते हैं। इस संदर्भ में उपन्यासकार लिखते हैं, ''सभी लोग यह भी जानते थे कि शादी होने तक विद्यार्थी बने रहना जरूरी है। तभी दहेज मिलेगा।''[6]

ग्रामीण समाज में प्रेम विवाह करनेवाले को समाज, बिरादरी के कोप–भाजन का शिकार होना पड़ता है और यदि विवाह दो भिन्न जाति के बीच होता है तब तो समाज में जीना अत्यंत कठिन हो जाता है।

'गोपुली गफूरन' उपन्यास में छोटे ठाकुर विक्रम तथा शिल्पकारिन गोपुली एक–दूसरे के प्रति आकर्षित हैं। विक्रम से गोपुली गर्भवती हो जाती है फिर भी वह उससे विवाह नहीं कर पाता क्योंकि ऐसा करने पर समाज में उसके लिए जीना अत्यंत कठिन हो जाएगा। इसी भय से वह गाँव से भाग जाता है।

दो भिन्न जातियों में प्रेम विवाह का कठोर परिणाम 'विकल्प' उपन्यास में इस प्रकार वर्णित किया गया है, ''गाँव में एक संपन्न राजपूत परिवार की जवान विधवा से चौबे जी की आसनाई हो गई।
दोनों कहीं भाग गए। कुछ पता नहीं चला। राजपूतों ने सुरती चौबे के बाप को मार डाला। उनका घर तहस–नहस कर दिया गया। चौबे जी की जमीन उन्हीं राजपूतों ने हथिया ली।''[7]

'ग्राम देवता' उपन्यास में अवतार बाबा का भाई जब मुहम्बेद जुलाहे की बेटी से तथा तिवारी का पुत्र प्यारू मुसलमान शहनाज से प्रेम विवाह करते हैं तो उन्हें गाँव से बाहर भागकर शहर जाना पड़ता है। बिरादरी द्वारा उनके परिवार का बहिष्कार कर दिया जाता है। उन्हें वापस बिरादरी में आने के लिए बिरादरीवालों को बिरादरी–भात देना पड़ता है।

सामाजिक चेतना

ग्रामीण समाज में शिक्षा तथा नगरीय प्रभाव आदि के कारण धीरे–धीरे लोगों में जागरूकता आ रही है। यह जागरूकता अपने अधिकारों के प्रति आई है, कहीं शिक्षा के प्रति तो कहीं रूढ़ि–परंपरा के विरोध के प्रति।

'महर ठाकुरों का गाँव' उपन्यास में ठाकुर जन–जाति का शिक्षित हरदा अपने ग्रामीण समाज में फैली रूढ़ि–परंपराओं, अंधविश्वास आदि का इस उपन्यास में प्रारंभ से अंत तक विरोध करता है।

'सोना माटी' उपन्यास का पात्र मास्टर रामरूप विवाह संबंधी रूढ़ि–परंपरा के विरोध में इस प्रकार सोचता है, ''नहीं, यह कोई न्याय नहीं है कि जो सभी करते हैं वही हम करें। इस तरह समाज कैसे बदल सकेगा? विवाह संबंधी फालतू परंपराएँ कैसे बदलेंगी?''[8]

'सुबह का भूला' उपन्यास का नायक अपनी माँ की तरह बिरादरीवालों के दबाव में नहीं आता है।

अधिकारिक चेतना

'संकल्पा' उपन्यास में शहर से पढ़ाई करके गाँव लौटा अरून ग्रामीणों को उनके अधिकार के प्रति जागरूक करने का संकल्प करते हुए सोचता है, ''उन्हें बताएगा कि उनके वोट की असली कीमत क्या है, जिसे वे लोग पाँच रूपये या आधा बोतल शराब के बदले बेच देते हैं।७.

'दंड विधान' उपन्यास में मास्टर भूरेलाल निम्न वर्गीय ग्रामीणों को जागृत करने के लिए छोटी – छोटी सभाओं का आयोजन करते हैं।

'विकल्प' उपन्यास में निम्न जाति का सुक्खू अपनी जाति के लोगों को छुआछूत का विरोध करने के लिए संगठित करता है और उन्हें समझाता है कि अब ऊँची जातिवाले उन्हें कुएँ से पानी पीने से रोक नहीं सकते क्योंकि इस मामले में सरकार भी उन्हीं के साथ है।

हालांकि आज भी गाँव में छुआछूत की समस्या ज्यों की त्यों है फिर भाी अपवादस्वरूप एकाध गाँव ऐसा भी है जहाँ नगरीय प्रभाव तथा औद्योगिक विकास के कारण छुआछूत के प्रति लोगों का दृष्टिकोण धीरे–धीरे बदल रहा है। इस परिवर्तन से 'विकल्प' उपन्यास का उच्च जाति का पात्र सुभग
सुकुल अत्यंत दुखी है, ''सुभग सुकुल को घोर दुख है कि लोग अब चौके–चूल्हे की पवित्रता का खयाल बिलकुल नहीं रखते। इस गाँव के लोग भी अब होटल में चाय पीने लगे हैं और दूसरी जाति के लोगों का छुआ खाने लगे हैा७0

इसी प्रकार इस उपन्यास में गाँव की औरतें मुसलमान मौलवी साहब से आरंभ में अपना इलाज नहीं कराती हैं किंतु जब बीमारी बढ़ जाती है तब वे मौलवी साहब का फूँका पानी पीने के लिए तैयार हो जाती हैं।

उच्चवर्ग / जमींदारों के शोषण का विरोध

सदियों से अपने ऊपर होनेवाले अत्याचार के खिलाफ अब गाँव का निम्नवर्ग धीरे–धीरे आवाज उठाने लगा। नवें दशक के उपन्यासों में इन अत्याचारों का अंकन भी किया गया है।

'दंड विधान' उपन्यास में उच्चवर्ग के अत्याचारों से तंग आकर निम्नवर्ग के लोग मास्टर भूरेलाल के मार्गदर्शन में उच्चवर्ग के खिलाफ लड़ने के लिए हथियार उठा लेते हैं।

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में जब गाँव का उच्चवर्ग पैसे के बलबूते पर निम्नवर्ग के कुछ लोगों को जेल भिजवा देते हैं तब निम्नवर्ग की स्त्रियाँ उच्चवर्ग का काम न करने का फैसला करती हैं।

'विकल्प' उपन्यास में जब चौबे का भानजा इंदर, सुक्खू चमार को ब्राह्मणों के कुएँ से पानी भरने के लिए पीटता है तब जवाब में, ''सुक्खू घूमा और इंदर को उठाकर पटकने के बाद उसके ऊपर अंधाधुंध घूँसों की बरसात करने लगा।''[11]

वैवाहिक चेतना

विवाह के संबंध में ग्रामीणों की रूढ़ मानसिकता में अब धीरे–धीरे कुछ बदलाव होने लगा है। वैवाहिक चेतना 'समर शेष है' उपन्यास में सुराज के भाई विराज के कथन द्वारा प्रकट होती है, ''शादी तिलक–दहेज देखकर होगी या आदमी देखकर? मैं देहाती ढंग की सौदेबाजियों का विरोधी हूँ। कुलीन और सभ्य समझदार व्यक्ति की सुशील कन्या मिल जाएगी तो मैं मुफ्त में विवाह करूँगा।''[14]

आज ग्रामीण समाज में लड़की का विवाह उसके माता–पिता बहुत सोच–समझकर करने लगे हैं। 'अग्निपर्व' उपन्यास में बिरजू अपनी पढ़ी–लिखी बेटी का विवाह उससे कम पढ़े लड़के के साथ करने को तैयार नहीं

विधवाओं का विवाह ग्रामीण समाज में एक प्रगतिशील कदम है किंतु इसके उदाहरण भी एकाध ही देखने को मिलते हैं।

'अग्निपर्व' उपन्यास में बिरजू के प्रयास से सित्तू की जवान विधवा बहु का सरजू हरवाहा से विवाह करा दिया जाता हैं क्योंकि दोनों एक दूसरे को पसंद करते हैं।

नारी चेतना

नवें दशक के कई उपन्यासों में ग्रामीण समाज में नारी को अपनी अधिकार के प्रति जागरूक चित्रित किया गया है। इतना ही नहीं वे अब अन्यायों का विरोध भी करने लगी है।

'संकल्पा' उपन्यास में गाँव की कमल एक जागरूक नारी है। जब उसके चाचा–चाची उसके हिस्से की जायदाद हड़प लेते हैं तो वह उनके खिलाफ मुकदमा करती है। आगे चलकर वह अपने हिस्से की जमीन बेचकर गाँव में एक अस्पताल बनाने का संकल्प करती हैं जो सिर्फ गाँव की औरतों और बच्चों के लिए होगा।

नवें दशक के कई उपन्यासों में गाँव में शिक्षित स्त्रियों का उल्लेख मिलता है लेकिन शिक्षित स्त्रियों का अनुपात बहुत कम है। 'गोपीगंज संवाद' में साधु गुसाई अपनी पत्नी को पढ़ाता है। इसी तरह 'आंगन नदिया' उपन्यास में मीठू अपनी पत्नी को परिवार की अन्य स्त्रियों के साथ पढ़ाता है।

'अग्निपर्व' उपन्यास की रजुली, सुमेरसिंघ की प्रिय छात्रा है। इस उपन्यास में पास के गाँव की विधवा कमला गाँव के स्कूल की अध्यापिका है। वह अपने संरक्षण में गाँव की दस लड़कियों को मैट्रिक की परीक्षा दिलाने के लिए शहर लेकर जाती है।

'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में महरूख अध्यापिका की प्रेरणा से गाँव की शाहीन ने इंटर कर लिया है तथा और आगे पढ़ने की इच्छा रखती है, ''आज शाहीन एम.ए. कर चुकी है, अच्छे घर में ब्याह कर भी जा रही है। कह रही थी कि मैं घर नहीं बैठूँगी, नौकरी मिल गई तो नौकरी करूँगी, वरना पी–एच. डी. या फिर डबल एम.ए. ही सही।''[15]

'अग्निपर्व' उपन्यास में गाँव की अध्यापिका कमला नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करती है । 'सोना माटी' उपन्यास में गाँव की विद्या अधिक शिक्षा पाने के लिए शहर जाती है।

गाँव में पोस्टर, इश्तहार द्वारा सामाजिक चेतना लाने का प्रयास

गाँव के निम्नवर्ग के किसान–मजदूरों में जागृति के लिए शहर के समान अब गाँव में भी पोस्टर, इश्तहार आदि का प्रयोग होने लगा है जिसकी पुष्टि नवें दशक के कई उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन से होती है।

'देश जिंदाबाद' उपन्यास में ग्रामीण समाज के निम्नवर्ग में जागृति के लिए पोस्टर, इश्तहारों के प्रयोग का वर्णन उपन्यासकार इस प्रकार करते हैं, ''और एक दिन गाँव, गली–बाजारों में – दीवारों पर ढेरों इबारतों के पोस्टर चिपकाए गए जिनमें 'हरिजनों, तुम किसी के गुलाम नहीं हो।' 'शशिबाबुओं का सिंहासन तोड़ दो' 'निहत्थों, हमारे साथ आओ, हम तुम्हारे बनेंगे', 'चार जून को आम सभा' –जैसे आह्वानों की भरमार ।ष16

'शैलूष' उपन्यास में किसान–मजदूरों की जागृति के लिए गाँव में इस प्रकार इश्तहार का प्रचार किया जाता है । इसी प्रकार 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में शहर के किसान–मजदूरों की रैलियों में भाग लेने के लिए गाँव का युवक चंदन अन्य के साथ मिलकर गाँव की दीवारों, दरवजों पर पोस्टर चिपकाता वर्णित किया गया है।

निष्कर्ष

उच्च तथा निम्नवर्ग में संघर्ष का ही चित्रण अधिकांश उपन्यासों, जैसे – 'दंड विधान', 'विकल्प', 'ठीकरे की मंगनी' आदि में किया गया है। निम्नवर्ग को संघर्ष के लिए प्रेरित मध्यवर्ग के पढ़े–लिखों द्वारा किया जाता है।

ग्रामीण समाज में बिरादरी का व्यक्ति पर दबाव होता है। बिरादरी से कटकर जीवन व्यतीत करना अत्यंत कठिन होता है। ग्रामीण समाज में संयुक्त परिवार के विघटन का ही अधिकांश उपन्यासों में चित्रण किया गया है। पारिवारिक संबंधों में तनाव बढ़ता जा रहा है। तनाव का प्रमुख कारण पारिवारिक संपत्ति है।

ग्रामीण समाज में आज भी नारी का जीवन दयनीय है। आज भी ग्रामीण नारी विधवा समस्या, अनमेल विवाह, बाल विवह आदि कई समस्याओं से ग्रस्त है।

सदियों से चली आ रही छुआछूत की समस्या गाँव में आज भी विराजमान है। अपवाद स्वरूप एकाध गाँव ऐसा भी है जहाँ स्वतंत्रता के पश्चात् औद्योगिक विकास तथा नगरीय प्रभाव के कारण छुआछूत की भावना में कमी आई है।

जहाँ ग्रामीण आज भी रूढ़िग्रस्त एवं समस्याओं से ग्रस्त हैं वहीं धीरे–धीरे शिक्षा आदि के प्रभावस्वरूप ग्रामीणों में धीरे–धीरे सामाजिक चेतना का विकास हो रहा है। गाँव के पढ़े–लिखे जागरूक व्यक्ति द्वारा धीरे–धीरे गाँव की रूढ़ि–परंपराओं का विरोध किया जा रहा है।

निम्न जातियों में अब अपने अधिकार के प्रति जागरूकता आ रही है तथा वे उच्चवर्ग द्वारा अपने शोषण का विरोध करने लगे हैं जिसके उदाहरण नवें दशक के 'दंड विधान', 'विकल्प', 'ठीकरे की मंगनी' आदि उपन्यासों में दृष्टिगोचर होते हैं।

संदर्भ – सूची

1. नासिरा शर्मा – ठीकरे की मंगनी पृ . 170
2. रामदेव शुक्ल – संकल्पा पृ . 54
3 रामदेव शुक्ल – विकल्प, पृ. 149
4. प्रणवकुमार बंधोपाध्याय – गोपीगंज संवाद, पृ . 46
5. विवेकी राय – सोना माटी,पृ . 87
6. रामदेव शुक्ल – संकल्पा पृ . 53
7. रामदेव शुक्ल – विकल्प, पृ. 12
8. विवेकी राय – सोना माटी, पृ . 189
9. रामदेव शुक्ल – संकल्पा पृ . 62
10. रामदेव शुक्ल – विकल्प, पृ. 118
11. रामदेव शुक्ल – विकल्प, पृ. 251
14. विवेकी राय – समर शेष है पृ . 129
15. नासिरा शर्मा – ठीकरे की मंगनी, पृ. 165
16. शैलेश पंडित – देश जिंदाबाद, पृ . 170